कैलिफोर्निया पाठ्यक्रम विवाद : कुछ प्रश्न

संकलन : दक्षिण एशिया के साथी (FOSA), एवं संम्प्रदायिकता विरोधी संगठन (CAC)

1) कैलिफ़ोर्निया पाठ्यक्रम की पुस्तकों के बारे में क्या विवाद है ?

कैलिफ़ोर्निया की पुस्तकों का हर छह वर्षों के बाद परीक्षण होता है। इस साल छटी कक्षा की प्राचीन भारत सम्बंधित पुस्तकों का परीक्षण हो रहा है। हम इस बात को नहीं नकारते कि इन पुस्तकों में कई त्रुटियॉ हैं। इन त्रुटियों का आश्रय लेते हुए Vedic Foundation(VF) और Hindu Education Foundation(HEF) ने – जिनका दक्षिणपंथी हिंदु संगठनों के साथ गठबंधन है – प्राचीन भारत के इतिहास और हिंदु धर्म के वर्णन के विषय में कई सुझाव दिए हैं! परंतु ये संगठन केवल त्रुटिग्रस्त पुस्तकों के संशोधन से संतुष्ट नहीं हैं। इन दलों के प्रस्तावित रूपांतर इनके उग्रवादी और जातिवादी कार्यक्रमों को भी प्रदर्शित करते हैं। ये कार्यक्रम भारतीय इतिहास को हिंदु धर्म के इतिहास से समीकृत मानते हैं और हिंदु धर्म की विभिन्न प्रणालियों को ब्राहमणवाद और वैदिक धर्म से जोड़ना चाहते हैं।

इस समय परिस्थिति यह है कि Curriculum Commission ने HEF और VF के जातिवादी प्रस्तावों को स्वीकार कर लिया है। केवल हार्वर्ड के माईकल वित्सल, यू सी एल ए के स्टैनली वोल्पर्ट, और यू सी डेविस के जे हाइत्समन जैसे विद्वानों ने पचास और विद्वानों के समर्थन से इनका विरोध किया है (http://www.people.fas.harvard.edu/~witzel/witzelletter.pdf). कुछ 130 दक्षिण एशिया अध्ययन के विद्वानों और प्रोफ़ेसरों ने एक “faculty letter” भी लिखा है और इन प्रस्तावों की कड़ी आलोचना की है। उनके इस मध्यवर्तन से अवश्य ही कई त्रुटिग्रस्त और संभावित रूप से हानिकारक सुझाव अब निकाल दिए गए हैं, लेकिन CC ने 2 दिसंबर को इन उग्रवादी दलों के कई रूपांतर स्वीकार कर लिए है।

हम CC के इन रूपांतरों की स्वीकृति से अप्रसन्न हैं, और State Board से अनुरोध करते हैं कि इन प्रस्तावों को स्वीकार न करे। हिंदुत्व संघटन की सफलता के कारण मीडिया इस विषय को हिंदुत्ववादी लेंस से प्रदर्शित कर रही है - यह विवाद अब “गोरे विद्वानों” और “अखंड और शोषित हिंदु समाज” के बीच बहस के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। हम इस अत्यंत सरलीकरण – जो असली विद्वत्ता को नकारता है – को नहीं स्वीकारते, और चाहते हैं कि मीडिया हिंदु और भारतीय समाज की विभिन्न परंपराओं और ख्यालों को सहज रूप से प्रदर्शित करे।

2) छटी कक्षा की पुस्तकों में क्या भारतीय इतिहास का वर्णन जातिवादी और यूरोकेंद्रित रूप से नहीं किया गया है? यदि हॉ, तो आपको इन रूपांतरों में क्या आपत्ति है?

इसमें कोई संशय नहीं कि जिन पुस्तकों का अभी कैलिफ़ोर्निया में परीक्षण हो रहा है, उनमें काफ़ी त्रुटियॉ हैं, और उनमें संशोधन अनिवार्य है! हम **सारे** रूपांतरों के विरुद्ध नहीं हैं। हमें केवल उन रूपांतरों से आपत्ति है जो भारत को हिंदु धर्म से समीकृत करते हैं और हिंदुओं को आर्यों से! हमें उन बदलावों से भी आपत्ति है जो भारत के शोषित समाज (दलित, नारियॉ और अल्पसंख्यक) के जीवन और संघर्षों को नकारते हैं। हम चाहते हैं कि परीक्षण प्रक्रिया में इंडो-अमेरीकन समाज के सक्रिय सदस्यों के अतिरिक्त दक्षिण एशिया अध्ययन के विद्वानों को भी सम्मिलित किया जाए। नवंबर 2005 में हमें पता चला कि जिन दो दलों (VF और HEF) ने परीक्षण प्रक्रिया में निवेश दिए हैं, उनका राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे दक्षिणपंथी और फ़िरकापरस्ती संघों से गहरा गठबंधन है। यदि यूरोकेंद्रित जातिवाद को उग्रवाद से बदल दिया जाए, तो यह हमारे बच्चों की शिक्षा में सहायक नहीं होगा।

3) हमारे बच्चों को क्या पढ़ाना चाहिए, क्या नहीं, इसमें क्या इंडो-अमेरिकन समाज की भूमिका महत्त्वपूर्ण नहीं है?

हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि हमारे समाज के सदस्यों का कैलिफ़ोर्निया के पाठ्यक्रम में योगदान हो। हम यह भी मानते हैं कि एक पारदर्शी पद्धति स्थापित की जाए, जो योग्य व्यक्तियों को परीक्षण प्रक्रिया के लिए चुने, और ये व्यक्ति पूरे इंडो-अमेरिकन समाज के प्रति उत्तरदायी हों। लेकिन अब तक जिन "सामाजिक सदस्यों" ने CC को निवेश दिए हैं, वे केवल बीस प्रतिशत सवर्ण जातियों के प्रतिनिधि हैं! इनमें से कोई भी ऐसा विद्वान् नहीं, जिसने दक्षिण एशिया के विषय में शोध कार्य किया हो। ये समुदाय **सारे** दक्षिणी एशियाओं के हेतु बोलना चाहते हैं, लेकिन फिर भी ये दक्षिण एशियाई लोगों की सॉस्कृतिक विभिन्नताओं को नकारते हैं।

4) यदि मुसलमान, ख्रिस्तान और यहूदी संगठनों के प्रस्ताव निर्विवाद स्वीकार कर लिए गए हैं, तो फिर आपको इस बात में क्यों आपत्ति है कि हिंदुओं के प्रति जो ग़लत धारणाएँ बनी हैं, वो इन पुस्तकों से निकाली जाएँ? यह क्या हिंदुओं के प्रति अन्याय नहीं है?

हमें इस बात की आपत्ति नहीं कि हिंदुओं, मुसलमानों, ख्रिस्तानों, यहूदियों**,** सिक्खों इत्यादि के प्रति जिन गलत धारणाओं का इन पुस्तकों में वर्णन है, वो सब इनसे निकाली जाएँ! हम केवल मिथ्यावाद और इतिहास के "sanitization" के विरुद्ध हैं! हम ये मानते हैं कि पुस्तकें वास्तविक पॉडित्य पर आधारित हों और संकीर्ण विचारधारा को प्रसारित न करें।

दूसरा, वर्तमान परीक्षण प्राचीन इतिहास की पुस्तकों पर है, धर्म पर नहीं। हम मानते हैं कि सारे रूपांतर केवल ऐतिहासिक योग्यता पर चुने जाएँ! इसलिए हम सारे अनैतिहासिक मिथ्यावाद के विरुद्ध हैं, चाहे वो इस्लाम, क्रिश्चियैनिटी, जूडाइस्म या हिंदु धर्म से संबंधित हों।

लेकिन दक्षिण एशियाई होने के नाते, हम केवल दक्षिण एशियाई इतिहास और सामाजिक ज्ञान की पुस्तकों में उपयुक्त मध्यवर्तन करने के लिए अपने को उत्तरदायी समझते हैं।

अंतिम बात यह है कि हम यह नहीं समझते कि असत्य बातों को निकालने से हिंदु धर्म की क्षति होगी। वस्तुतः हम यह समझते हैं कि यदि हमारे बच्चों को सक्षम विद्वत्ता से परिचित कराया जाए, तो यह उनके हित की बात होगी, हानि की नहीं। यदि हम यह मान भी लें कि अन्य धर्मों के संगठन इन पुस्तकों में अपना "propaganda" डालने में सफल हुए हैं, तो भी यह हमारे बच्चों के लिए हितकारी नहीं कि वे ऐतिहासिक रूप से संदिग्ध व्याख्यानों को सच मानें, जो हिंदु धर्म की अत्यंत संकीर्ण विचारधारा को प्रसारित करते हों।

इस संदर्भ में यह प्रश्न उठता है – हम क्यों इतिहास पढ़ते या लिखते हैं? क्या सिर्फ़ इसलिए कि हम वर्तमान में अपने पर गर्व कर सकें? क्या इसलिए नहीं कि हम भूत के बारे में जानें ताकि हम वर्तमान को समझ सकें, और दलन और अन्याय के विरुद्ध लड़ सकें?

5) आप किन किन संशोधनों के विरुद्ध हैं?

हमें तीन तरह की आपत्तियॉ हैं:

- हम जातिभेद और लिंगभेद की "sanitization" के विरुद्ध हैं, क्योंकि हम समझते हैं कि ऐसी "sanitization" दलितों, औरतों और अन्य कमज़ोर वर्ग के लोगों के संघर्ष को नकारती है।
- हम हिंदु धर्म को ब्राह्मणवाद से समीकृत करने के विरुद्ध हैं! हम चाहते हैं कि हिंदु धर्म की विभिन्न सजीव परंपराओं को दर्शाया जाए।
- हम उस अनैतिहासिक मत के विरुद्ध हैं, जिसके अनुसार इंडो-यूरोपीय लोगों का उद्गम भारत में हुआ था। लेकिन तत्कालीन इतिहासकारों का मत है कि ये लोग मध्य एशिया से आए थे।

6) ऐसा लगता है कि जैसे CC और State Board of Education(SBE) के बीच press reports में काफ़ी confusion है। कुछ रिपोर्टों के अनुसार SBE ने VF/HEF के संशोधनों को स्वीकार कर लिया है। क्या आप इस विषय पर कुछ प्रकाश डाल सकते हैं?

SBE ने अभी VF/HEF के प्रस्तावों को स्वीकार नहीं किया है। इस समय इस बात पर चर्चा चल रही है कि क्या CC की दिसंबर 1-2 की मीटिंग ने CC के उस आदेश का उल्लंघन किया जिसके अनुसार पुस्तकों में जो भी संशोधन हों, वो ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित हों, और उनमें कोई भी नई सूचना न डाली जाए।

Curriculum Development and Supplemental Materials Commission, जो संक्षेप में Curriculum Commission(CC) के नाम से भी जानी जाती है, SBE के लिए एक परामर्शी पैनल के रूप में काम करती है! इस पैनल में 18 सदस्य हैं। उनमें से दो कैलिफ़ोर्निया के लेजिस्लेचर से चुने जाते हैं, और 13 SBE निर्धारित करती है। CC के अनेक कामों में एक पुस्तकों का परीक्षण और उनकी सिफ़ारिश करना भी है। पुस्तकों में क्या डाला जाए, इस विषय में CC का कोई न्यायिक अधिकार नहीं है। इस काम की उत्तरदायी केवल SBE है। अपने विभाग के कर्मचारियों (Curriculum Frameworks and Instructional Resources Division) से परामर्श के बाद SBE CC के प्रस्तावों को स्वीकार या अस्वीकार करती है! पूरी जानकारी के लिए http://www.cde.ca.gov/ci/cr/cf/documents/fwdev.pdf पर जाएँ।

7) Content Review Panel(CRP) क्या है?

नवंबर 9 की मीटिंग – जिसमें VF/HEF के संशोधनों पर चर्चा हुई थी – के बाद SBE ने प्रो. वोल्पर्ट, प्रो. हाईट्समन और प्रो. विट्सल को "Official Content Review Panel" के लिए निर्धारित किया। इस पैनल का मकसद VF/HEF के संशोधनों का मूल्यॉकन करना था। बोर्ड के निर्देश के अनुसार CRP के परीक्षण के बाद SBE ने एक रिपोर्ट तैयार की जिसमें यह सलाह दी गई कि CC केवल उन संशोधनों को स्वीकारे जिनको CRP ने स्वीकार किया हो।

दक्षिण एशिया के साथी (FOSA – Friends of South Asia) **के विषय में**

1) क्या यह सच नहीं कि FOSA में पाकिस्तानी भी हैं ? प्राचीन भारत के इतिहास के बारे में पाकिस्तानियों को टिप्पणी करने का अधिकार क्यों है ?

हॉं, FOSA में पाकिस्तानी अवश्य हैं। जहॉं तक उनके टिप्पणी करने का सवाल है, हम कहना चाहेंगे कि जिस प्राचीन भारत की बात इन पुस्तकों में की गई है, उनमें आजकल का पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, बॉंगलादेश, नेपाल, भूटान सभी शामिल हैं। वास्तव में सिंधु घाटी की सभ्यता के सबसे बड़े केंद्र मोहनजोदारो और हड़प्पा आजकल के पाकिस्तान में हैं। इसलिए पाकिस्तानियों का इस विषय में चर्चा करने का पूरा अधिकार है।

हम यह भी कहना चाहेंगे कि यह विषय केवल दक्षिणी एशियाइयों के इतिहास तक सीमित नहीं है। इसका संबंध कैलिफ़ोर्निया के सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों से भी है। विवाद इन विषयों पर है : 1) इतिहास और माईथोलोजी के बीच में क्या सीमाएँ हैं ? 2) इतिहास की पुस्तकों में क्या डाला जाए, क्या नहीं, यह इतिहास के विद्वान् निर्धारित करें या

कि संकीर्ण विचारधारा के धार्मिक संगठन ? जिस तरह Creationism पढ़ाने के विषय में (केवल) रूढ़िवादी ख्रिस्तानों की राय नहीं ली जाती, उसी तरह इस विषय की चर्चा पूरे अमेरिका में होनी चाहिए।

2) क्या FOSA अपने राजनीतिक पूर्वग्रह सिद्ध करने के लिए इतिहास का निर्माण नहीं कर रही?

हम मानते हैं कि इतिहास लेखन एक राजनीतिक क्रिया है, और किन लोगों का इतिहास लिखा जाए, किनका नहीं, ये सब निर्णय भी राजनीतिक हैं। हम अपनी राजनीति किसी से नहीं छुपाते – हम दक्षिण एशिया की विभिन्नताओं का सराहते हैं! हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि दलितों, नारियों और कमज़ोर वर्गों के इतिहास को प्रसारित करना अनिवार्य है, और हमें इस बात से कोई लज्जा नहीं है। हम यह मानते हैं कि अन्यायों और संघर्ष के इतिहास का वर्णन करना और दक्षिण एशियाई लोगों के प्रति पूर्वग्रह के बीच बहुत अंतर है। हम यह भी मानते हैं कि विद्वत्ता पर आधारित इतिहास हमें अन्याय और हिंसा के विरूद्ध लड़ने के हथियार प्रदान करेगा। हम इस बात से भी सहमत हैं कि इतिहास में विभिन्न विचारधाराओं को प्रस्तुत किया जाए, जहॉ तक वे ठोस विद्वत्ता पर आधारित हों।

संकलन : दक्षिण एशिया के साथी (FOSA), एवं संम्प्रदायिकता विरोधी संगठन (CAC), 2006.
http://www.friendsofsouthasia.org